RNI No MAHHIN/2015/65212 https://shreedeshna.page shreedeshna77@gmail.com

मासिक पत्रिका

श्री देशना

सांस्कृतिक चेतना की संवाहिका...

वर्ष : ७ अंक : ५ शुल्क २०/

प्रधान-सम्पादिका : डॉ.नीलम जैन 89993 99481

पुणे दिसम्बर 2021

संपादिका : डॉ. ममता जैन 9970790398

सम्पादकीय

नव वर्ष का करें हम स्वागत अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ

भारत में नववर्ष का प्रारंभ होता है चैत्र माह की शुक्ल प्रतिपदा को। पूजन, अर्चन, मंगलोत्सव के साथ प्रकृति और संस्कृति से जुड़कर भारत में नववर्ष का स्वागत होता है। सूर्योदय के साथ तेजस्वी रश्मियों वासंतिक पर्यावरण, नव-नव कलिकाओं-पत्रों के प्रस्फुटन की सुवासित वायु के साथ परस्पर मंगल संदेशों का स्वस्तिवाचन के आदान-प्रदान से ही नव वर्ष मनाया जाता है। रात के अंधेरे में होटल, बार, रेस्टोरेण्ट्स में नहीं। जैन नववर्ष दीपावली से अगले दिन शुरू होता है। भगवान महावीर स्वामी को दीपावली के दिन ही निर्वाण प्राप्ति हुई थी। इसके अगले दिन ही जैन धर्म के अनुयायी नया साल मनाते हैं। इसे वीर निर्वाण संवत् कहते हैं।

भारत ही विश्व में ऐसा देश है जहां ऋतुओं का स्वागत पर्व-त्यौहारों से करते हैं। वर्तमान में ऐसा प्रतीत होता है कि नववर्ष का उत्सव केवल पश्चिम में होता है। भारत के समस्त राज्य, समस्त भारतवासी अपने नववर्ष को मनाते हैं- महाराष्ट्र में 'गुडी पड़वा', पंजाब में वैशाखी, तमिल में पुबाडु, केरल में विशु, आंध्र प्रदेश में उगादि (युगादि-युग-आदि) कश्मीर में नवरेह, असम में बोहाग बिहू, कर्नाटक में उगाडि नववर्ष का ही तो आयोजन है। हमारे आयोजन प्रकृति से संपृक्त हैं। प्रकृति से ऊर्जा और प्रेरणा, प्रकृति का संरक्षण-संवर्द्धन, प्रकृति से सामीप्य, प्रकृति के प्रति पूज्यभाव यही भारत के पर्वों की विशिष्टता है। इसमें व्यक्तिगत हितैषणा नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व का कल्याण और ब्रह्माण्ड में शांति समृद्धि की मनोभावना रहती है।

भारत में भी पर्व आमोद-प्रमोद, हर्ष-उल्लास, आनंद से ही नववर्ष मनाया जाता है। हम क्यों अपनी संस्कृति के अनुकूल पर्व को मनाना छोड़ते जा रहे हैं।

१ जनवरी को हम नववर्ष के रूप में आज मना भी रहे हैं तब भी मनाने का ढंग तो सात्विक व प्राकृतिक होना चाहिए। हमारी खुशी में घर-परिवार, समाज भी सम्मिलित रहना चाहिए। रात-रात भर केक काटना, शराब पीना, अश्लील हुड़दंग मचाना क्या यही हमें नववर्ष में चाहिए? क्या यही हमारी सभ्यता और संस्कृति है? नववर्ष के सूर्योदय के साथ-साथ अपने जीवन को पवित्र, सात्त्विक, सद्गुणी, प्रयोजनशील बनाने का संकल्प लेना ही तो नवर्ष है। नववर्ष एक दिन नहीं होता, जीवन का एक नया अध्याय होता है। हमारे शुभ नव-संकल्प, नव-ध्येय ही हमारे जीवन को नया बनाते हैं और उस साल को जीवन के खाते में स्वर्णिम अक्षरों में जोड़ देते हैं।

आइए, कुछ अच्छे नये संकल्प लें। गत वर्ष तो कोरोना ने अन्दर बन्द रखा हमें। कोरोना के साथ जीना सिखाया, इस वर्ष और अधिक सावधानी रखनी है, नये-नये वैरिएण्ट्स आ रहे हैं, हमारी जीवनशैली कोरोना काल की सावधानियों के साथ ही संचालित रहे। नववर्ष सम्पूर्ण विश्व के लिए शांति, सुख, समृद्धि, आरोग्यवर्द्धक रहे तथा नववर्ष के रंगों में संस्कृति की चमक-दमक बनी रहे। सभी को नववर्ष की शुभकामनाएँ।

-डॉ. नीलम जैन, पुणे

अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी की पावन धरा के इतिहास में प्रथम बार
परम पूज्या जैन धर्म प्रभाविका आर्यिका रत्न 105 श्री सृष्टि भूषण माताजी के
मंगल आशीर्वाद एवं सानिध्य में आयोजित होने जा रहा है।
24वें तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी की अतिशयकारी धरा पर
भव्य 24 समव शरण की रचना के साथ
श्री 1008 समव शरण महामंडल विधान
एवं विश्व शांति महायज्ञ
दिनांक : 23 फरवरी 2022 से 28 फरवरी 2022 तक
पावन सानिध्य
परम पूज्यनीया आर्यिका 105
श्री सृष्टि भूषण माताजी ससंघ
मधुर संगीत
राम कुमार एण्ड पार्टी
भोपाल
श्री तृप्तिभूषण माताजी
निर्देशन
बा. ब्र. नेहा दीदी
• एक समवशरण बुक कराने हेतु न्यौछावर राशि 1,01,111/-
• सौधर्म इन्द्र 5,00,000/- • चक्रवर्ती 5,00,000/- • कुबेर इन्द्र 3,00,000/-
• महायज्ञ नायक 3,50,000/- • यज्ञ नायक 3,00,000/- • ईशान इन्द्र 3,00,000 /-
• सामान्य इन्द्र मंच पर स्थान 1,50,000/- • विधान में सामान्य इंद्र-इंद्राणी 2100/-
• ध्वजा रोहण 1,00,000/-
अन्य सहयोग-द्रव्य प्रदाता 2,51,000/- एक समय के भोजन की व्यवस्था 51,000/-
साड़ी हार मुकुट धोती, दुपट्टा, भोजन व्यवस्था आयोजन समिति की ओर से की जाएगी
आयोजक : श्री आदिनाथ सृष्टि धर्म प्रभावना समिति (रजि.)
निवेदक : सकल दिगम्बर जैन समाज
श्री महावीरजी, जयपुर, गंगापुर सिटी, करौली, हिण्डौन, बयाना, सिंकदरा, खेड़ली, अलवर, लालसोट, सवाई माधोपुर, टोंक, निवाई, उनियारा, बांदीकुई, राजगढ़, कठूमर, भरतपुर, धौलपुर
सम्पर्क सूत्र : 9660403861, 9413924197, 9079957285

नैनागिरि की आदिजिन पंचतीर्थी पुरातन प्रतिमा

-डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर

मध्यप्रदेश के छतरपुर जिलान्तर्गत नैनागिरि-रेसिन्दीगिरि अतिशय-सिद्ध क्षेत्र है। बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ के काल से इस तीर्थ का संबंध है। उस समय यहां से इन्ददत्त, गुणदत्त, वरदत्त, सायरदत्त, और मुनीन्द्रदत्त मुनि मोक्ष पधारे, लगभग दो हजार वर्ष पहले की रचना णिव्वाणभत्ति में इसका उल्लेख है। यह महान तीर्थ क्षेत्र तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की उपदेश भूमि- जिसे समवसरण कहा जाता है- रही है। यहां यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक धर्मशाला है। यहां मुण्डीटोरी, इन्द्रवन, तलहटी के १७ मंदिर, महावीर सरोवर के ३ और पहाड़ी के ३८ जिनालय और प्राचीन प्रतिमाएँ दर्शनीय हैं।

नैनागिरि की पहाड़ी पर से उत्खनन में कई प्राचीन मूर्तियां प्राप्त हुई थीं। तीर्थंकर ऋषभनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा उन्हीं में से एक है। यह प्रतिमा पुरातत्त्व व मूर्तिकला और शिल्पकला के इतिहास की दृष्टि से अत्यंत महत्व की है। इसका परिकर प्राचीन मूर्तिकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह लाल पाषाण के ५२ इंच ऊँचे और २५ इंच चौड़े शिलाफलक पर, पंचतीर्थी सपरिकर प्रतिमा है।

इस प्रतिमा में सबसे नीचे आसन में सिंहासन के दो सिंह अंकित हैं, जिनका बाहरी तरफ का पैर कुछ ऊपर को स्तंभ के सहारे उठा हुआ है। सिंहों से कुछ पीछे को दाहिनी ओर गोमुख यक्ष एवं बायीं ओर चक्रेश्वरी यक्षिणी अंकित है। शास्त्रों में ये चौबीसों तीर्थंकरों के अलग अलग यक्ष-यक्षिणी वर्णित हैं, तीर्थंकर ऋषभनाथ के गोमुख यक्ष और चक्रेश्वरी यक्षिणी कहे गये हैं। इस प्रतिमा के सिंहासन में बीच में आगे को नक्कासी है, किन्तु इसमें मृगदाव जैसे विरुद्धाभिमुख दो शार्दुल अंकित हैं। शार्दुल डायनासौर जैसा बड़ा जानवर था जिसका शरीर शेर जैसा होता था, किन्तु विशालता में हाथी के बराबर या हाथी से बड़ा, फुर्तीला जानवर बताया गया है, इसी के नाम पर शार्दुलविक्रीड़ित छंद है। अन्यत्र जैन प्रतिमाओं पर यह अंकन नहीं मिलता है। सिंहासन के ऊपर भी एक सामान्य आसन है, जिस पर मूलनायक प्रतिमा पद्मासन में विराजमान है। सिंहासन पर आगे बीच में शार्दुलद्वय के ऊपर एक वृषभ (बैल) अंकित है। जो प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ का लांछन-चिह्न है। ऋषभनाथ को वृषभनाथ और आदिनाथ भी कहते हैं।

उसी सिंहासन पर हाथ जोड़े, नतमस्तक भक्त-युगल बैठा दर्शाया

गया है। पुरुष भक्त दाहिनी ओर तथा स्त्री-भक्त बायीं ओर शिल्पित है। दोनों के मस्तक प्रतिमा के पद्मासन के मुड़े हुए पैरों से छू रहे हैं। इसमें यह विभेद नहीं दर्शाया गया है कि स्त्री का जिन-प्रतिमा से स्पर्श होना चाहिए या नहीं। सिंहासन पर कुछ पीछे को जहां यक्ष-यक्षी बने हैं उनके ऊपर के स्थान पर दोनों ओर कलायुक्त चँवरधारी शिल्पित हैं। तीर्थंकर के अष्ट प्रातिहार्यों में 'चामरयुग्मे' चँवरधारी युगल कहे गये हैं। इस प्रतिमा के चँवरधारियों के देवतुल्य वेशभूषा है। शिरोमुकुट, बाजुबंद, कुण्डल, दोहरा गलहार, यज्ञोपवीत, कटिबंध, अधोवस्त्र, पैजनिया आदि आभूषण भूषित उकेरे गये हैं। चँवरधारियों के प्रतिमा की ओर के हाथ में चँवर ढुराते हुए प्रदर्शित हैं। अर्थात् एक के बांयें हाथ में तथा एक के दायें हाथ में चँवर है।

परिकर को ही आगे देखें तो चँवरधारियों के ऊपर एक-एक देव ऐसे बने हैं जो आकाश में तो विचरण कर रहे हैं, किन्तु अपने ऊपर भारी बजन ढो रहे हैं, वह भार है हाथियों का। देव के ऊपर बड़ा तख्ता है, उसके ऊपर हाथी खड़ा है, हाथी के ऊपर एक एक युगल बैठा है। आगे आगे पुरुष है जो हाथों में बड़ा सा कलश लेकर प्रभु का अभिषेक करते हुए दर्शाया गया है, पुरुष के पीछे हाथी पर स्त्री बैठी है, जिसके हाथों में संभवतः माला है। यह दोनों ओर की स्थिति है। प्रभु की छवि इतनी विशाल है कि हाथी पर बैठ कर भी व्यक्ति अभिषेक करने उतने ऊपर नहीं पहुँच पाता इसलिए देवों ने हाथियों को ही ऊपर आकाश में उठा लिया अंकित है। यहां भी देवों को आभूषण-भूषित दिखाया गया है।

मूलनायक प्रतिमा जी के ऊपर कलात्मक छत्रत्रय है। छत्रत्रय के दोनों ओर पूर्ण आभूषण पहिने माल्यधारी देव अंकित हैं, ये अपने अपने दोनों हाथों में कलायुक्त पुष्पमाला लिये हुए हैं। छत्रत्रय के ऊपर श्रीफल युक्त कलश बना है, कलश के पीछे और छत्रत्रय के ऊपर दुंदुभि बादक (ढोलक बादक) शिल्पित है। प्रायः दर्शनार्थी की दृष्टि इस तक सहज नहीं पहुंचती है, किन्तु इसके बिना परिकर पूर्ण नहीं होता, यह भी अष्ट-प्रातिहार्यों में से एक है।

मुख्य प्रतिमा जी का नासाग्रदृष्टियुक्त मुखमण्डल बहुत ही मनमोहक है। हम तो कहेंगे कि नैनागिरि जी की जितनी भी प्रतिमाएँ हैं, उन सब में सर्वाधिक मनमोहनी प्रतिमा यह है। इसके उष्णीस के साथ घुंघराले केश उकरित हैं। लंबे कर्ण और उन कर्णों के पीछे से दोनों ओर से त्रिजटायुक्त केश स्कंधों पर लटके हुए अंकित हैं। जैन मूर्तिकला के प्रारंभिक समय में चौबीस तीर्थंकरों के लांछन-चिह्न नहीं मिलते हैं। केवल दो ही तीर्थंकरों की पहचान हुई- एक तो प्रथम तीर्थंकर की स्कंध पर लटकी हुईं केश-जटाएँ तथा मस्तक पर कलात्मक जटा-जूट अंकन से और दूसरे २३वें तीर्थंकर की पार्श्वनाथ की सर्पफणाटोप से। इसके बाद सुपार्श्वनाथ के पांच फणाटोप और पार्श्वनाथ के सात, नौ तथा अधिक फणाटोप का अंकन होने लगा। बाद के कालखण्डों में शनैः शनैः चौबीसों तीर्थंकरों के लांछनों का अंकन होने लगा।

शिलाफलक की इस मुख्य प्रतिमा के वक्ष पर श्रीवत्स का चिह्न, व्यवस्थित उदर, नाभि आदि बहुत ही संतुलित गढ़े गये हैं। पद्मासन होने से दोनों पैरों के तलुए व अंगुलियां स्पष्ट देखीं जा सकतीं हैं, बल्कि पद्मासन लगाने से पैरों की अंगुलियों की स्थिति कैसी हो जाती है, वह भी दर्शाया गया है। पैरों के ऊपर हाथ के ऊपर हाथ है। बायां हाथ नीचे, उसके ऊपर दाहिना हाथ है। बायीं हथेली नीचे होने पर भी उसकी पांचों उँगलियां इस तरह अंकित हैं कि पूर्णता दिखाई दे।

मुख्य प्रतिमा के दोनों ओर चँवरधारी देवों के ऊपर एक-एक कायोत्सर्ग अर्थात् खड्गासन प्रतिमाएँ और उनके ऊपर को भी एक-एक कायोत्सर्ग प्रतिमाएँ उकरित हैं। इनके भी पादपीठ बनाये गये हैं। कायोत्सर्गस्थ होने से दिगम्बरत्व स्पष्ट है। इस तरह पार्श्ववर्ती चार तीर्थंकर और एक मुख्य प्रतिमा होने से इसे पंचतीर्थी कहा जाएगा। कला की दृष्टि से भी यह अपनेआप में अनूठा उदाहरण है।

अनुमानतः यह प्रतिमा नौ से ग्यारहवीं शताब्दी की है, जिसके कई कारण हैं- १. नौवीं शताब्दी से पीछे इसलिए नहीं जा सकते क्योंकि इसके चँवरधारी देवों में दायी ओर के देव के बायें हाथ में और बायीं ओर के देव के दाहिने हाथ में चँवर अंकित है। नौवीं-दसवीं शताब्दी के बाद से शास्त्रीयता की अपेक्षा सजावट पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। अन्यथा प्राचीन प्रतिमाओं में चँवरधारी दाहिने हाथ से ही चँवर ढुराते दिखाये गये हैं, चाहे वे दायें खड़े हों या बायें। २. इसी तरह सिंहासन के सिंहों के भी दायें और बायें पंजे उठाये हुए दिखाये गये हैं। ३. आसन में शार्दुल का अंकन। शार्दुल का अंकन खजुराहो की कला में प्रचुर मात्रा में मिलता है। खजुराहो के अधिकांश मंदिर-मूर्तियां दसवीं शताब्दी कीं हैं। उसकला और कारीगगरों की विशेषज्ञता का प्रभाव अन्य मूर्तियों पर रहता है। अतः यह सपरिकर प्रतिमा दसवीं शताब्दी के लगभग की ठहरती है।

२२/२, रामगंज, जिंसी, इन्दौर, मो. ९८२६०९१२४७

सत्तर से ऊपर वालों के लिए विचारणीय बिन्दु

सत्तर वर्षों से ऊपर के धर्म-स्नेही बन्धुओं के लिए गम्भीरता से विचारणीय ८ बिन्दु हैं। इस दुर्लभ नरभव को पाकर क्या हमने आत्मकल्याण का लक्ष्य बनाया है? नहीं बनाया हो तो अब शीघ्र बनाकर इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्रयास करना चाहिए। अचानक लक्ष्य प्राप्ति के पूर्व देहावसान भी हो जाए तो उसके लिए अगली पर्याय में अवश्य सुविधा व अवसर की प्राप्ति होगी। (प्रवचनांश- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज) निम्न बिन्दु विचारणीय हैं-

१. इस बहुमूल्य पर्याय का कितना समय और बचा है?

२. शरीर किस प्रकार शिथिल होता जा रहा है?

३. चित्त की चंचलता किस प्रकार समाप्त कर आत्म-बल बढ़ाया जाए?

४. बीमारी तथा वृद्धावस्था का समय बाद देकर आत्मसाधना के लिए कितना समय हमारे पास बचा है?

५. अब तक हमने जितना भी शास्त्रज्ञान प्राप्त किया है- क्या वह हमारे आत्मकल्याण के लिए पर्याप्त नहीं है?

६. अब शास्त्रज्ञानवर्धन के लिए कितना समय और सामर्थ्य हमारे पास बचा है?

७. मोह का बन्धन ढीला पड़ जाए-क्या इस प्रकार का प्रयास करने का समय अब नहीं आ गया है?

८. घर परिवार से दूर किसी अच्छे क्षेत्र पर सत्संगति में रहने का समय अब आया कि नहीं ?

इस प्रकार गम्भीरतापूर्वक विचार कर अपनी अधूरी पारिवारिक तथा सामाजिक जिम्मेदारीयां पूरी कर नये सिरे से जीवन प्रारंभ कर देना चाहिए। जिस प्रकार से हम एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए तैयारी करते हैं, उसी प्रकार इस पर्याय को छोड़कर अगली पयार्य में जाने की तैयारी करने का अब समय आ गया है।

-सम्पतलाल छाबड़ा, कोलकाता- १६

सोचने और करने का अंतर!

कलमकारों / रचनाकारों से संवाद

-कमलेश कमल

क्या पर्याप्त ज्ञान और सृजनात्मक अभिरुचि होने के बावजूद आप अपने विचारों को एकत्रित कर ठीक से अभिव्यक्त नहीं कर पा रहे हैं? अगर ऐसा है तो, यह आलेख आपके लिए ही है।

ऐसा देखा जाता है कि विषय-वस्तु की अच्छी पकड़, विश्लेषण करने और लिखने की अच्छी क्षमता के बीच भी कभी-कभी रचनात्मकता खोने सी लगती है। इसका मूल कारण मस्तिष्क के विभिन्न पहलुओं व बौद्धिक क्षमताओं का रचनात्मकता से समन्वय नहीं होना है।

ऐसी स्थितियों को ग़ौर से देखने पर पता चलता है कि बाक़ी सभी कारकों की उपस्थिति के बावजूद भी लेखक या रचनाकार अपने मन में स्पष्ट रूप-रेखा नहीं बना पाता। उदाहरण के लिए, अगर किसी कुशल चित्रकार को एक लड़की की तस्वीर बनानी है तो आसानी से बना सकता है; लेकिन उसके मन में यही स्पष्ट नहीं है कि वह कैसी लड़की की तस्वीर बनाना चाहता है, कब बनाना चाहता है, किस आकार-प्रकार की बनाना चाहता है। यह एक ऊहापोह की स्थिति होती है, जिसे लेखकीय अवरोध (writer's block) आदि का नाम दे दिया जाता है।

इसे समझने के लिए पहले थोड़ा मानव-मन को समझना होगा। सभ्यता के इस दौर में वर्तमान मानव को एक उन्नत मस्तिष्क मिला हुआ है, जिसका कोर्टेक्स सच ही बहुत अद्भुत होता है। सोचकर विस्मय होता है कि मानव मस्तिष्क में लगभग १० अरब मस्तिष्क कोशिकाएं या न्यूरॉन्स होती हैं।

इनमें से हर न्यूरॉन अपनी संरचना में विशिष्ट होता है। इनके अंदर विद्युत रसायन मिश्रण (electro chemical miqture) और माइक्रो डाटा प्रॉसेसिंग ट्रान्समिशन सिस्टम होता है। अब ये न्यूरॉन्स आपस में इस तरह जुड़े होते हैं कि क्षण भर में ही सूचना और अनुभूतियों को एक से दूसरे तक पहुँचा देते हैं।

देखा जाए तो इस १० अरब न्यूरॉन्स वाले मानव मस्तिष्क की क्षमता का सही आकलन अभी तक नहीं हो पाया है। हाँ, इतना तय है कि मानव मस्तिष्क में सोचने, याद करने, समस्या सुलझाने, कुछ रचनात्मक करने या फिर विश्लेषण करने की अद्भुत क्षमता होती है।

आधुनिक शोधों से यह भी पता लगा है की मस्तिष्क रेखीय गति में कार्य नहीं करता। यह कई दिशाओं में अपने विचारों का विकिरण करता है। इन बिखरे विचारों में से कुछ को छोड़ने और कुछ को जोड़ देने की क्षमता बहुत विशिष्ट है। सिर्फ़ एक विचार नहीं पकड़ना है, एक जैसे विचारों को पकड़ना है।

जब हम कुछ विचारों को छोड़ देते हैं और कुछ विचारों को आपस में जोड़ देते हैं, तो स्पष्टता आ जाती है। इस सुयोग से लेखन, गायन या चित्रण में एक लय, एक सुसंबद्धता आती है। अगर विचार ही कड़वत रूप में नहीं जुड़े हैं, तो पैराग्राफ कैसे जुड़ेंगे?

इस तरह देखा जाए तो जिसमें जितनी स्पष्टता होगी, वह उतनी ही मात्रा में सुसंगत लेखन कर सकेगा। वस्तुतः, जब हम ठान लेते हैं कि हमें लिखना ही है, चित्र बनाना ही है या कोई अन्य कार्य करना ही है, तो मस्तिष्क हमें यह मदद करता है कि कुछ असंबद्ध विचारों को पटल से हटा देता है।

थोड़ी देर के लिए मानते हैं कि आपके मन में तीन ख्याल हैं-

१. आज शाम पीवीआर में सिनेमा देखना है।

२. आज क्रिकेट मैच देखना है।

३. आज बच्चे के साथ खेलना है।

अब, अगर आप घर से निकल पड़े हैं -सिनेमा हॉल की तरफ; तो आपका मस्तिक बच्चे के साथ खेलना और क्रिकेट मैच से जुड़े बहुत सारे विचारों को हटा देता है। ऐसे में आपके मुख्य पटल पर अब यह है कि टिकट कैसे मिले, सीट कौन सी मिले, कितने बजे पहुँचना है आदि ।

इस घटना को लेखन के संदर्भ में देखें! जब आप यह तय कर लेते हैं कि आपको लिखना ही है, तो बहुत सारे असम्बद्ध विचारों को आपके मन से आपका मस्तिष्क हटा देता है। अब, जबकि आप यह तय करते हैं कि आपको किस विषय पर लिखना है, तो कुछ और चीजें आपका मस्तिष्क आपके पटल से हटा देता है। इस तरह आप लेखन की ओर अग्रसर होते हैं।

लगातार लिखने से न्यूटन द्वारा दिया गया 'गति का पहला नियम' आपके साथ होता है और आप आगे बढ़ते जाते हैं। रुके रहने और नहीं लिखने से भी न्यूटन का पहला नियम या 'जड़त्व का नियम' आपके साथ आता है ..और आप नहीं लिख पाते हैं। तो, लगातार श्रम, और एक जैसे बिखरे विचारों को संकेंद्रित कर हम सफल हो सकते हैं। सारतः, हम जो सोचते हैं, वही होने लगता है। जिस दिशा में सोचते और करते हैं, उसी दिशा में प्रगति होती है। चुनाव आपका है ।

मॉर्निंग वॉक

–ओमप्रकाश पांडेय

आज जब मैं मार्निंग वाक कर रहा था तो रास्ते में अचानक मुझे स्वेत वस्त्र धारण किए हुए एक सज्जन दिखे । पास जाने पर देखा कि उन्होंने केवल एक धोती पहन रखी थी और उसका एक भाग आगे से होते उनकी पीठ पर लटक रहा था। दाढ़ी लम्बी व सफेद थी। मैंने उन्हें प्रणाम किया, उन्होंने कल्याण हो का आशीर्वाद दिया। मैंने कहा क्षमा करें, आप को पहले इधर कभी मैंने देखा नहीं है, क्या नये आये हैं। उन्होंने कहा मेरा बेटा रहता है, उसी के पास आया हूं। उन्होंने कहा– मैं अल्मोड़ा से आगे एक गांव में रहता हूं। मैंने बात को आगे बढ़ाने के लिए कोरोना रोग के बारे में बात छेड़ दी। उन्होंने कहा कि देखो हर चीज का एक मूल्य होता है, कभी हमें मूल्य पता होता है और कभी नहीं। जिसका मूल्य पता है वह तो ठीक है क्योंकि अगर उतना पैसा मेरे पास है तो हम खरीदेंगे, अन्यथा नहीं खरीदेंगे। परन्तु जिसका मूल्य पता नहीं हो या तत्काल में बिना मूल्य दिये मिल रहा हो और हम ले लें, तो वह हमें भविष्य में काफी क्षति पहुंचाती है। आज आप अनियंत्रित प्रगति, वैश्विक आर्थिक विकास, अनियंत्रित भोग, बिना विचारे पीढियों से स्थापित जीवन–मूल्यों को छोड़ कर दूसरे के जीवन–मूल्यों को अपनाने का जो अपराध, हम सबने जाने या अनजाने किया है उसका मूल्य तो चुकाना पड़ेगा। मैंने कहा महोदय जीवन और उसमें होने वाला परिवर्तन, विकास की सतत और एक लम्बी प्रक्रिया है और हम सबको समाज में और समाज के साथ ही रहना है, इसमें मेरा क्या दोष? उन्होंने बड़े गम्भीर हो कर मेरी ओर देखा, उनका चेहरा काफी कठोर हो गया। अचानक पूछा, तुमने महाभारत पढ़ा है? मैंने कहा पढ़ा नहीं परन्तु धारावाहिक देखा है। आगे फिर उन्होंने पूछा कि उस समय हुए विनाश के लिए कौन दोषी था। मैंने दोनों हाथ जोड़ कर कहा– महोदय हमारी पीढ़ी ने आजादी के बाद से ही किसी भी विषय पर गम्भीर अध्ययन और विचार करना तो पहले ही छोड़ दिया है। फिर आपके इस महाभारत संबंधित प्रश्न का उत्तर तो भगवान श्री कृष्ण भी नहीं दे पाए तो मेरी क्या औकात है। मैंने फिर उनसे हंसकर कहा– आप मेरे प्रश्न को टाल रहे हो। उन्होंने कहा– देखो मैं टाल नहीं रहा और अब सीधा उत्तर देता हूं। देखो अगर कोई भी समाज किसी भी कीमत पर प्रगति करना चाहेगा और उसने अपने परम्परागत जीवन मूल्यों को बिना विचारे छोड़ कर, दूसरे के जीवन मूल्यों को अपनाने की गलती करेगा तो उसे भारी मूल्य चुकाना ही पड़ेगा। आज का भारतीय समाज वहीं मूल्य चुका रहा है। इस बात को स्वीकार करो, किसी को न तो दोष दो और न बहाने बनाओ। इतना कहकर वो वृद्ध पुरुष अपने रास्ते चले गए। मैं वहीं खड़ा अभी भी यही सोच रहा हूं , क्या उन्होंने सही कहा ?

प्रदूषण से बचने का अनोखा तरीका

मुझे हाल ही में व्हाट्सअप पर एक सन्देश के माध्यम से जानकारी प्राप्त हुई कि गूगल ने अमेरिका स्थित अपने हैडक्वार्टर माउंटेन व्यू में २०० बकरियों को बतौर कर्मचारी काम पर रखा हुआ है। हैरान मत होइए बकरियां यहां किसी सॉफ्टवेयर पर काम नहीं करतीं, बल्कि कंपनी के लॉन में घास काटने यानी उसे चरने का काम करतीं हैं। बकरियों द्वारा घास खाने से लॉन में घास की ट्रिमिंग हो जाती है।

इसके जरिए कंपनी कार्बन उत्सर्जन में कटौती कर रही है। मशीन से घास काटने से ईंधन की खपत होती है, जिससे पर्यावरण में कार्बन उत्सर्जन भी बढ़ता है और इस दौरान मशीन से होने वाले शोर से कंपनी के कर्मचारियों का ध्यान भी भंग नहीं होता है। साथ ही यह कदम जीवप्रेम एवं अहिंसा का अच्छा उदहारण है।

इसी वर्ष ऐसा ही एक छोटा सा प्रयास MITS ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस, पाली, राजस्थान में किया गया। यह शिक्षण संस्थान विद्या ज्योति ट्रस्ट, चेन्नई द्वारा संचालित है, जो ब्यावर-पाली मार्ग पर लगभग ३० एकड़ भूभाग में फैला है। शिक्षण संस्थान में वर्षा ऋतु के समय बड़ी-बड़ी घास उग आती है और घास की कटाई के लिए मशीन आदि का उपयोग किया जाता है, परन्तु इस वर्ष संस्थान में घास की कटाई हेतु मशीनों का उपयोग नहीं किया गया। अपितु नजदीकी ग्रामीणजनों के जानवरों को चराकर घास की कटाई करवाई गई। वास्तव में ऐसे छोटे-छोटे प्रयास जहाँ एक ओर पर्यावरण की दृष्टि से अनुपम हैं वहीं जीवों के प्रति हमारे प्रेम के भाव को भी प्रकट करते हैं। क्या वास्तव में जीव हिंसा से बचाव हेतु एक अनुकरणीय कदम हो सकता है।

जय जिनेन्द्र।

सुगालचंद जैन
चेन्नई, तमिलनाडु

अयोध्या, इक्ष्वाकु और आदि तीर्थंकर ऋषभदेव

शैलेन्द्र कुमार जैन
लखनऊ

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में एक है जिसका समर्थन सिंधु सभ्यता के पुरातत्व और वैदिक साहित्य से होता है। भारत विश्व में आदि काल से ही ज्ञान विज्ञान का केन्द्र था। यजुर्वेद में अपने देश की संस्कृति को विश्व की प्रथम संस्कृति (साः प्रथमः संस्कृति विश्ववारा ४.४७) कहा गया। ज्ञातव्य है कि जिसका प्रवर्तन भोगभूमि को कर्मभूमि के रूप में परिवर्तित तीर्थंकर ऋषभदेव ने अयोध्या में ही किया था। जैसा भागवत पुराण (अथ ह भगवानृषभ देवः स्ववर्ष कर्मक्षेत्र मनुमन्य मानः प्रदर्शित गुरुकुल वासो) एवं महापुराणकार (आषाढमासबहुलप्रतिपद्दिबसे कृती। कृत्वा कृतयुगारम्भं प्रजापत्यमुपेयिवान् ।।) के उल्लेखों से स्पष्ट है। भविष्य द्र□टा मानव के आदि जनक मनु महाराज ने ऋषभदेव को लक्षित कर यह लिखा होगा ('एतद् प्रस्तस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं स्वं चरित्रं शिवेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः') इस देश में एक अग्रजन्मा-आदिदेव ऋषभ होंगे-जो सारे संसार को चरित्र की शिक्षा प्रदान करेंगे।[2] ('ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता। स ब्रह्मविद्या सर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ।।' मुण्डकोपनिषद १.१) देवताओं में सर्वप्रथम ब्रह्मा उत्पन्न हुए। वे विश्व के कर्ताः असि, कृषि, मसि, वाणिज्य, शिल्प और विद्या के संप्रदाता थे, इसीलिए तीनों भुवनों के रक्षक थे। उन्होंने समस्त विद्याओं में प्रतिष्ठित ब्रह्मविद्या (अध्यात्म विद्या) अपने ज्येष्ठ पुत्र अर्थव-भरत (यहाँ अर्थव शब्द भरत के पर्याय के रूप में लिया है) के निमित्त कही। जैन ग्रन्थों के अनुसार-ऋषभदेव ने अपने १०० पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र भरत को अर्थशास्त्र और न्यायशास्त्र, ऋषभसेन को संगीत, अनन्त विजय को चित्र, विश्वकर्मा को वास्तु एवं बाहुबली को कामशास्त्र और आर्युवेद का ज्ञान दिया। उन्होंने अपनी पुत्री ब्राम्ही को ब्राम्ही लिपि और सुन्दरी को अंक लिपि का अभ्यास कराया। पुरुषों को ७२ और स्त्रियों को ६४ कलाओं का ज्ञान दिया।

चौथी सदी ई०पू० जिन केवली प्रतिमा

ऋषभ (केसी)

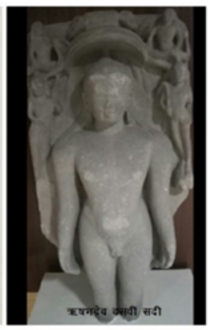

ऋषभदेव [illegible] सदी

पाषाण विज्ञान के मूर्धन्य विद्वान् डॉ. एच.डी. संकालिया के अनुसार यदि आधुनिक पुरातत्त्व मनुष्य के संस्कार के स्तरों का वर्णन करे तो नाभिराय या उनके पुत्र श्री ऋषभदेव का युग कृषि-काल कहलाएगा जो कि पाषाणयुग के बाद आता है, और सम्भवतः इसीलिए ऋषभदेव प्रथम उपदेष्टा कहे जाते हैं, जिन्होंने मनुष्य को सभ्य बनाया। इसका समर्थन श्री के.बी. फिरोदिया, पू. स्पीकर विधानसभा, बम्बई ने भी किया है- भगवान ऋषभदेव मानवता के पहले नियन्ता थे। जिन्होंने भौतिक संसार में संस्कृति और सभ्यता के बीजों को बोया था। संसार उनके प्रति चिरऋणी है। सुप्रसिद्ध गांधीवादी चिन्तक काका साहेब कालेलकर का यह निष्कर्ष नितान्त ही उचित है- 'हिन्दु समाज को संस्कारी और सभ्य बनाने में ऋषभदेव का बड़ा भारी हिस्सा था। कहा जाता है कि विवाह-व्यवस्था, पाकशास्त्र, गणित, लेखन आदि संस्कृति के बीज ऋषभदेव ने समाज में बोये। अगर यों कहें तो भी चलेगा कि यह सब करके और अन्त में उसका त्याग करके ऋषभदेव ने प्रवृति और निवृति दोनों मार्गों का आचरण करके दिखाया।

ऋग्वेद में ऋषभ का उल्लेख एक क्षत्रिय राजा के रूप में मिलता है और साथ ही अर्हन्त संज्ञा भी प्राप्त होती है। यजुर्वेद में ऊँ नामोअर्हतो ऋषभो, अथर्ववेद में अहिंसक वृत्तियों के प्रथम राजा आदि रूपों में उल्लेख मिलते किया गया है। इसी प्रकार ताण्ड्य ब्राम्हण-ऋषभो वा पशूनामधिपति। (१४/२/५) शतपथ ब्राम्हण-ऋषभा वा पशूनां प्रजापति। (२/२५/१७) में ऋषभ को पशुपति कहा गया है। महाभारत के शान्तिपर्व में महायोगी. अर्हत कहा है। ऋषभादि महायोगी नामाचारे। इष्टाय अर्हतारयों मोहिता। हनुमान नाटक से भी यही सिद्ध है-'अर्हन्नित्यथा जैनशासनरताः।', सन्त विनोबा भावे जी का कहना है वेद वचनों में 'अर्हन इदं विश्वसंभवस' आदि वचन पाये जाते हैं। अर्हन् शब्द जैन धर्म के अधिनायक भगवान ऋषभदेव को ही सूचित करता है। इसी प्रकार पौराणिक साहित्य में लिंगपुराण (४७/२०-२३), ब्रम्हाण्डपुराण (१/२/१४), शिवपुराण (३७/५७) एवं विष्णुपुराण (२/१/२७-२८) में चक्रवर्ती भरत (जिनके नाम पर यह देश अजनाभवर्ष से भारतवर्ष हुआ) के पिता के रूप में भी ऋषभदेव का उल्लेख मिलता है। भागवतपुराण पंचम स्कन्ध से भी इसका समर्थन होता है।

ए०एस०आई० के पूर्व महानिदेशक डॉ० मुनीश चन्द्र जोशी ने (ऋषभ सौरभ, ६२, पृ० ६४) अपने लेख में लिखा है कि भारतीय परम्पराओं के अनुसार ऋषभनाथ एक प्रारम्भिक राजवंश में उद्भूत युगपुरुष थे, उनका सम्बन्ध अयोध्या नामक नगर से था। अथर्ववेद में हिरण्यमय कोश से आवृत्त देवताओं की नगरी अयोध्या की महिमा वर्णित है। जैन परम्परानुसार ऋषभदेव जब माता के गर्भ में आये तब हिरण्य की वर्षा हुई थी और उसी समय अयोध्या हिरण्यमय कोष से आवृत्त हो गयी। गरुण पुराण में सात मोक्षदायनी पुरियों में प्रथम माना है। रामायण में उल्लेख है कि बहुत वर्षों से जनशून्य (शूनी

पड़ी) रमणीक अयोध्या नगरी राजा ऋषभ के समय बसी। (‘अयोध्यापि पुरी रम्या शुन्या वर्षगणान् बहून। ऋषभं प्राप्य राजानं निवासमुपयास्यति ।) इस नगरी का निमार्ण स्वंय मनु ने कराया था। जैन परम्परा में भी अयोध्या आदितीर्थ कहा गया है एवं इसका निर्माण मनु (नाभिराय) ने कराया था। आचार्य यतिवृषभ ने तिलोयपण्णत्ति में ‘जादो हु अवज्झाए उसहों’ आदि गाथाओं द्वारा सूचित किया है कि अयोध्या नगरी में ऋषभदेव का जन्म हुआ था। अजितनाथ, अभिनन्दनाथ, सुमितनाथ और अनन्तनाथ जिनेश्वरादि पाँच तीर्थंकरों का आविर्भाव अयोध्या में ही हुआ था।

जैन मान्यता के अनुसार अयोध्या एक शाश्वत तीर्थ है। अंतिम मनु नाभिराय अपनी संगिनी मरुदेवी के साथ यहीं निवास करते थे। और यहीं उनके पुत्र आदितीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म हुआ था, जिनके अपर नाम आदिदेव, आदिनाथ, आदिपुरुष, स्वयंभू, प्रजापति, पुरूदेव कश्यक और इक्ष्वाकु थे। मनु पुत्र ऋषभदेव इक्ष्वाकु ही इस नगर के प्रथम नरेश थे, और इसी नगर में उन्होंने मानवों को लोक धर्म एवं आत्म धर्म का सर्वप्रथम उपदेश दिया। इनके उपरान्त हुए अन्य २३ तीर्थकरों में से २२ उन्हीं के इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए थे, जिनमें दूसरे अजितनाथ, चौथे अभिनन्दननाथ, पाँचवें सुमतिनाथ और चौदहवें अनन्तनाथ का जन्म भी अयोध्या में ही हुआ था। इस प्रकार अयोध्या पाँच तीर्थकरों की जन्मभूमि रही है।

भगवान ऋषभदेव के निर्वाणोपलक्ष में भरत चक्रवर्ती ने अयोध्या में एक उत्तुंग सिंह-निषद्या निर्माण कराई थी तथा नगर के चारों महाद्वारों पर २४ तीर्थंकरों की निज-निज शरीर प्रमाण प्रतिमाएं स्थापित की तथा स्तूप एवं मूर्ति कला का विकास भी इस नगर में सर्वप्रथम विकास हुआ। भरत के उपरान्त सुभौम, सगर, मघवा आदि कई अन्य चक्रवर्ती सम्राट भी अयोध्या में हुए और महाराज रामचन्द्र एवं लक्ष्मण जैसे शलाकापुरुषों को जन्म देने का श्रेय भी अयोध्या को ही है। रामचन्द्र दीक्षा लेने के बाद पद्ममुनि के नाम से प्रसिद्ध हुए और अर्हत् परमेश्वर बनकर मोक्ष गये। महारानी सीता की गणना जैन परम्परा की सोलह आदर्श महासतियों में है। यज्ञों में पशुबलि के प्रश्न को लेकर नारद और पर्वत के बीच राजा वसु की राजसभा में होने वाला विवाद भी एक अनुश्रुति के अनुसार अयोध्या में ही हुआ था। राजनर्तकी बुद्धिषेणा और प्रीतंकर एवं विचित्रमति नामक मुनियों की कथा का तथा अन्य अनेक जैन पुराण-कथाओं का घटनास्थल यह नगर रहा। अन्तिम तीर्थकर महावीर अपने एक पर्व भव में तीर्थंकर महावीर के रूप में भी वह अयोध्या पधारे, यहां के सुभूमिभाग उद्यान में उन्होंने मुमुक्षुओं को धर्मामृत पान कराया तथा कोटिवर्ष के राजा चिलाति को जिनदीक्षा दी थी। उनके नवम गणधर अचलभव का जन्म भी अयोध्या में ही हुआ था।

महावीर निर्वाण के लगभग एक सौ वर्ष पश्चात् मगधनरेश नन्दिवर्धन ने इस नगर में मणिपर्वत नामक उत्तुंग जैन स्तूप बनवाया था, जिसकी स्थिति वर्तमान मणिपर्वत टीला सूचित करता था। मौर्य सम्राट सम्प्रति और वीर विक्रमादित्य ने इस क्षेत्र के पुराने जिन मंदिरों का जीर्णोद्धार एवं नवीनों का निर्माण कराया था। गुजरात नरेश कुमारपाल चौलुम्य (सोलंकी) ने भी यहां जिनमंदिर बनवाये बताये जाते हैं। ग्यारहवी शती ई० में यहाँ जैन धर्मावलंबी श्रीवास्तव्य कायस्थ राजाओं का शासन था, जिन्होंने सैयद सालार मसउद गाजी को, जो अवध प्रान्त पर आक्रमण करने वाला संभवतया सर्व प्रथम मुसलमान था, वीरता पूर्वक लड़कर खदेड़ भगाया था। सन् ११९४ ई. के लगभग दिल्ली विजेता मुहम्मद मखदमूशाह जूरनगोरी ने अयोध्या पर आक्रमण किया और ऋषभदेव जन्मस्थान के विशाल जिनमंदिर को ध्वस्त करके उसके स्थान पर मसजिद बना दी, किन्तु स्वयं भी युद्ध में मारा गया और उसी स्थान पर दफनाया गया जो अब शाहजूरन का टीला कहलाता है। उसी टीले पर, मसजिद के पीछे की ओर, आदिनाथ का एक छोटा सा जिनमंदिर तो थोड़े समय पश्चात ही पुनरु बन गया, किन्तु चिरकाल तक उसका चढ़ावा अयोध्या के बकसरिया टोले में रहने वाले शाहजूरन के वंशज ही लेते हैं।

ऐसी भी किंवदन्ति जनश्रुत होती है कि अवध के बादशाह नसिरुद्दीन हैदर के समय में मणिपर्वत से नंदयुग का एक शिलालेख प्राप्त हुआ था, जो अब अप्राप्त है। मणिपर्वत के दक्षिण दिशा-स्थित एक कृषिक्षेत्र (खेत) से अयोध्या के शुंगकालीन प्रथम शती ई.पू. के राजा धनदेव का संस्कृत शिलालेख भी मिला है। सम्भवतः एतद्विषयक एक अभिलेख अयोध्या के रामकथा संग्रहालय या डॉ० रा.मा.लो. अवध वि.वि. फैजाबाद में सुरक्षित है। सन् १८६५ में अयोध्या के सन्न निकट प्राचीन सिक्कों का एक दफीना मिला था, जिसमें तीन प्रकार के प्राचीन सिक्के थे, जो स्थानीय नरेशों के प्रतीत होते हैं। दूसरी पहली ई.पू. के सिक्कों में एक ओर वृषभ या हस्ती, दूसरी तरफ चैत्यवृक्ष, स्वस्तिक, नन्द्यावर्तादि जैन चिन्ह हैं। तीसरी कोटि के सिक्के दूसरी-चौथी सती ई. के स्थानीय मित्र वंशी राजाओं के प्रतीत होते हैं। ये भी वृषभ, नंदिपादादि प्रतीकों से समलंकृत थे। चौथी-पांचवी सदी ई.पू. नन्दों के बाद अयोध्या इक्ष्वाकुवंशी चन्द्रगुप्त मौर्य के अधिकार में थी। उसी काल के वहाँ हनुमानगढ़ी के पास खुले क्षेत्र के खुदाई में प्राप्त चौथी सती ईसा पूर्व की जिन केवलिन की मूर्ति (भारत में प्राप्त प्राचीनतम जिन प्रतिमा) एवं सिक्कों (२ सदी ई.पू.) पर वृषभ, हाथी के चिह्न और राजाओं के नाम में (धनदेव, विशाखादेव) देव शब्द का प्रयोग और वृषभ राज चिह्न (जो सत्ता परिवर्तन पर भी नहीं बदलता था) ऋषभदेव की ऐतिहासिकता का समर्थन करते हैं।

शेष अगले अंक में

गणाचार्य श्री विरागसागर जी कृत रत्नत्रयवर्धिनी टीका के परिपेक्ष्य में

विषय विरक्ति का फल

-डॉ. नीलम जैन, पुणे

गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने कुन्दकुन्दाचार्यकृत रयणसार पर वहुत ही वैदुष्यपूर्ण रत्नत्रयवर्धिनी संस्कत टीका लिखी है। इस में विषय विरक्ति के संदर्भ में बहुत ही शास्त्रीय विश्लेषण किया गया हैं।

गाथा ७४ में आचार्य लिखते हैं-

वत्थुसमग्गो णाणी सुपत्तदाणी फलं जहा लहदि।
णाण समग्गो विसय परिचत्तो लहदि तहा चेव।।

अर्थात्- पदार्थों से समृद्ध ज्ञानी सुपात्रदान देकर जैसा (प्रशस्त) फल प्राप्त करता है वैसा ही सुफल विषयों का त्याग करने वाला ज्ञान समृद्ध व्यक्ति प्राप्त करता है।

अब विषय विरक्ति के संदर्भ में जो बिन्दु इस गाथा से हमें प्राप्त होते हैं।

१. पदार्थ समृद्धि २. ज्ञानी. ३. सुपात्रदान ४. फल

कौन से पदार्थ समृद्धि के द्योतक हैं

गाथा ७५ कहती है-

१. भू महिला-कणयादि- अर्थात् जमीन जायदाद, कामिनी, कंचन, चक्रवर्ती हो अथवा सामान्य पुरुष इन्हीं पदार्थों के आधार पर समृद्धि निर्धारित होती है। जितना जिसका अनुपात उतना वह समृद्ध।

२. ज्ञानी- यह ज्ञानी वह ज्ञानी नहीं, जो हमारे आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी कहते हैं- भो ज्ञानियो ! ज्ञानी जो पदार्थों से समृद्ध रहकर भी सुपात्र दान आदि दान देता है। और प्रशस्त फल प्राप्त करता है।

३. सुपात्र को अर्थात् निर्ग्रन्थ श्रमणों आदि उत्तम पात्र को "ज्ञानी" जानता है। दान देने की विधि, "दान देय मन हरष विशेषे", और सम्यक् ज्ञान है पात्र सुपात्र की पहचान क्षमता विवेक है- क्या देना है, कैसे देना है, कब देना है, कितना देना है, कहां देना है वह सब जानता है, वह ज्ञानी।

४. फल-१६ से २१ गाथा तक तीन प्रकार के फल हैं-

१. प्रथम फल इष्ट संयोग- संसार में सर्वाधिक प्रभावी सुख है सम्बन्धों की अनुकूलता-

२. चक्रवर्ती जैसा वैभव।

३. व्यक्तिगत नितान्त निजी, सुन्दर रूप, स्वर, सुलक्षण, सुमति, सुशील, चरित्र, शुभ लेश्या, शुभ नाम कर्म, शुभ साता वेदनीय ये सब सुपात्र दान के फल कहे हैं।

गाथा-२२ के अनुसार उल्लेखनीय है कि प.पू. आचार्य श्री ने लिखा है कि वह संसार सुख को भोगता हुआ क्रमशः श्रेष्ठ निर्वाण सुख को प्राप्त होता है ऐसा जिनवर का आदेश है।

गाथा- २८ में स्पष्ट किया है कि अगर आप यह समझे कि हर प्रकार का दान निर्वाण का कारण हो जाएगा यह उत्युक्त नहीं हैं- उन्होंने लिखा कि इस पंचम काल में यंत्र-मंत्र-तंत्र की प्राप्ति के लिये, सेवा के लिये, पक्षपात से प्रियवचन व वाक्पटुता से प्रतीत, विश्वास, मान-प्रतिष्ठा के लिये दिया गया दान कभी भी मोक्ष का कारण नहीं हो सकता। कम हो या अधिक निर्वाण का कारण नहीं होता।

गाथा-१६ कहती है- जो सुपात्र को दान देता है वह दाता भोग और स्वर्ग के सुख को प्राप्त करता है।

दान और देव पूजा-

देवपूजा, गुरोपास्ति, स्वाध्याय, संयम,
तप, दान सुपात्र के परम आवश्यक कर्तव्य हैं।

देव- गुरू- सत्य- वंदण- सुर्यभय सज्जाद,
दाण पूय फलेण तिलोए सुरपुज्जो हवइ।
सुद्धमणो दाणफलेण तिलोए सारसुहं मुंजदे णियदं।।

पूजा से देवों द्वारा व दान से तीनों लोकों में सारभूत सुख प्राप्त करता है।

१५. साधु को आहार देते समय सिर्फ जिनलिंग देखो-

पत्तापत्त विसेसं संदंसणे किं वियारेण।।१५।।

जो सुपात्र को दान देता है विशेष रूप से वह दाता भोग और स्वर्ग के सुखों को प्राप्त होता है ऐसा जिनेन्द्र भगवान का आदेश है।

भोगस्थल नहीं, परीक्षा स्थल हैं।

फिर भी वात्सल्य के तीर्थ आचार्य प्रवर कहते हैं विषयासक्ति आपको लोभ कषाय से ग्रसित करेगी जो सर्प के विष के समान है। आगे कहते हैं उसका उपाय भी मणि, सम्यग्ज्ञान वैराग्य रूपी मणि से संभव है।

इतनी सटीक उपमा है लोभ से सर्प की और उपाय रूप में मणि की।

सर्प की उपमा आचार्यों ने विषय भोगों से की है। विषय-भोग, भुजंग आदि। देखिए सर्प सदैव युवा रहता हम वृद्ध होते हैं त्वचा से, लेकिन सर्प केंचुली बदलता है- विषयी व्यक्ति सदैव स्वयं को युवा समझता है, वृद्ध होने पर भी क्या भोग नहीं भोगता अर्थात् युवा के समान ही भोगता है।

२. विषधर को समाने के लिये प्रवेश के लिए एक छोटा सा छिद्र चाहिए। विशालकाय भी हो टेढ़ा मेढ़ा सब समा जाता है। एक छोटा सा मिथ्यात्व एक भी इन्द्रिय की छोटी सी छिद्र बिंदु चाहिये प्रवेश होने को। शराबी पहले एक बूंद ही पीता है। सिगरेट का एक कश ही लगाता है, फिर चैन स्मोकर बन जाता है

३. सर्प ही ऐसा है जिसमें नभ, जल, थल तीनों प्रकार की जाति हैं। इस तरह विषय भोगों से तीनों लोक भरे पड़े हैं। सर्पों में ही नागिन अपने बच्चों को भी खा जाती है, विषयी लम्पटी सारे घर को नष्ट कर देते हैं, न जाने कितने घर बर्बाद हो जाते हैं।

विष को दूर करने में भी नागमणि ही काम आती है। देखिए विष दिल में भरा होता है और नागमणि मस्तिष्क में रहती है- विषयभोग बुद्धि पूर्वक विवेक से नहीं भोगे जाते। जब विवेक जागृत होता है तो विषयों का विष उतर जाता है। सम्यग्ज्ञान और तदनुरूप आचरण बना देना चाहिए। पूज्य गुरुवर ने इसी को सम्यक्त्व ज्ञान और वैराग्य का नाम दिया है। वैराग्य का अर्थ उदासीनता वैराग्य का अर्थ है विवेक एवं ज्ञानपूर्वक आगे बढ़ने का संकल्प लक्ष्य सहित पग बढ़ाने का उद्यम सोचती हूं। मुझे भी अब विषय विरक्ति हो जानी चाहिये तभी उसके फलस्वरूप सभी का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

मुट्ठियों में कैद है जो सबको बांट दो।
आपकी हो या मेरी हथेलियां खाली ही जानी हैं।।

कहानी

प्रारब्ध का हिसाब

एक व्यक्ति एक दिन बिना बताए काम पर नहीं गया। मालिक ने सोचा कि उसकी तन्खाह बढ़ा दी जाये तो वह और दिल्चसवी से काम करेगा।और उसकी तनख्वाह बढ़ा दी।

अगली बार जब उसको तनख्वाह से ज़ूयादा पैसे दिए तो वह कुछ नहीं बोला चुपचाप पैसे रख लिये।

कुछ महीनों बाद वह फिर ग़ैर हाज़िर हो गया। मालिक को बहुत ग़ुस्सा आया। सोचा उसकी तनख्वाह बढ़ाने का क्या फायदा हुआ?

यह नहीं सुधरेगा और मालिक ने बढ़ी हुई तनख्वाह कम कर दी और इस बार उसको पहले वाली ही तनख्वाह दी।

वह इस बार भी चुपचाप ही रहा और ज़बान से कुछ ना बोला। तब मालिक को बड़ा ताज्जुब हुआ।

मालिक ने उससे पूछा कि जब मैंने तुम्हारे ग़ैरहाज़िर होने के बाद तुम्हारी तनख्वाह बढ़ा कर दी तुम कुछ नहीं बोले और आज तुम्हारी ग़ैरहाज़री पर तनख्वाह कम कर के दी फिर भी खामोश ही रहे। इस की क्या वजह है?

उसने जवाब दिया जब मैं पहले ग़ैर हाज़िर हुआ था तो मेरे घर एक बच्चा पैदा हुआ था, आपने मेरी तन्खाह बढ़ा कर दी तो मैं समझ गया परमात्मा ने उस बच्चे के पोषण का हिस्सा भेज दिया है। और जब दोबारा मैं ग़ैर हाजिर हुआ तो मेरी माता जी का निधन हो गया था, जब आप ने मेरी तन्खाह कम दी तो मैंने यह मान लिया कि मेरी माँ अपने हिस्से का अपने साथ ले गयीं, फिर मैं इस तनख्वाह की ख़ातिर क्यों परेशान होऊँ? जिसका ज़िम्मा खुद परमात्मा ने ले रखा है।

एक खूबसूरत सोच अगर कोई पूछे जिंदगी में क्या खोया और क्या पाया, तो बेशक कहना, जो कुछ खोया वो मेरी नादानी थी और जो भी पाया वो प्रभु की मेहरबानी थी। खूबसूरत रिश्ता है मेरा और भगवान के बीच में, ज्यादा मैं मांगता नहीं और कम वो देता नहीं।

हिंदी के चलन में छाई है ये उदासी

माँ को न माने माँ , परदेसी को माँ–सी।
क्यों हिन्दी के चलन में छाई है ये उदासी?
माँ भारती के भाल पर हिन्दी का ताज हो।
सारे ही हिंदुस्तान में हिन्दी का राज हो।।
हिन्दी में ही सम्पन्न सभी राज काज हो।
होने का हिंदुस्तानी हमें भी तो नाज़ हो।।
अब न कोई चाल चले और सियासी।
क्यों हिंदी के चलन में छाई है ये उदासी?

आचार्य पं. पृथ्वीनाथ पाण्डेय की पाठशाला

पंचम स्तवक

हमने अपने पाठकवर्ग के लिए इस अंक से एक ऐसे स्तम्भ का समारम्भ किया है, जो निस्सन्देह, भाषा के क्षेत्र में एक ''मील का पत्थर'' सिद्ध होगा। ऐसा इसलिए कि इस स्तम्भ के अन्तर्गत उन शब्दों और वाक्यों की शुद्धता और उपयुक्तता बतायी जायेगी, जिनसे हमारा समाज परिचित रहते हुए भी, उनके शुद्ध प्रयोग के प्रति सजग रह नहीं पाता।

इस अंक से प्रतिष्ठित व्याकरणाचार्य, भाषाविद्, भाषाविज्ञानी तथा समीक्षक आचार्य पं. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, प्रयागराज हमारे पाठकवर्ग को शुद्ध और उपयुक्त शब्द-प्रयोग के प्रति जागरूक करेंगे। आप गम्भीरतापूर्वक 'आचार्य पं. पृथ्वीनाथ पाण्डेय की पाठशाला' में अध्ययन करते हुए, अपने 'शब्दज्ञान' का विस्तार करें और हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करायें। -सम्पादक

आर्शीवाद, आसिर्वाद, आशिर्वाद (आशीर्वाद) १५२– आधीन (अधीन) १५३– परीक्षापयोगी (परीक्षोपयोगी) १५४– बीचो बीच/बीचो–बीच (बीचोंबीच) १५५– ढाढस/ढाड़स (ढाढ़स) १५६– श्रेष्ठतम (श्रेष्ठ) १५७– आवागमन (गमनागमन) १५९– पुरूष (पुरुष) १६०– सन्यासी (संन्यासी) १६१– मृत्योपरान्त (मृत्यूपरान्त) १६२– छटी कक्षा, छटवी कक्षा, छटीं कक्षा, छठवी, छठवीं (छठी कक्षा) १६३– नवीं कक्षा, नवमी कक्षा (नौवीं कक्षा) १६४– जागरुकता (जागरूकता) १६५– प्रलय होगी। (प्रलय होगा।) १६६– धूम्र पान, धूम्र–पान (धूमपान, धूम–पान) १६७– श्रीमान (श्रीमान्) १६८– वह महिला बुद्धिमान् है। (वह बुद्धिमती है।) १६९– कृतित्व/कर्त्तृत्त्व/कर्त्तृत्व (कर्तृत्व) १७०– विद्यालय के छात्र–छात्राएं/छात्र–छात्राएँ (विद्यालय की छात्र–छात्राएँ) १७१– सविस्तारपूर्वक (विस्तारपूर्वक) १७२– यत्र–तत्र–सर्वत्र (सर्वत्र) १७३– गाना गाना (गीत गाना) १७४– समन्दर, समुन्दर (समुद्र) १७५– सम्पदाओं, सम्पत्तियों (सम्पदा, सम्पत्ति) १७६– संवेदनाओं (संवेदना) १७७– रेलवे विभाग (रेलविभाग/रेल–विभाग) १७८– रेलवे मन्त्री (रेलमन्त्री/ रेल–मन्त्री १७९– पी.एच.डी., पी–एच.डी., पी०एच०डी० (पी–एच० डी०) १८०– डॉ., डा०, प्रो. (डॉ०, प्रो०) १८१– एकदिनी, एक दिनी (एकदिवसीय) १८२– दो दिवसीय, दोदिवसीय (द्विदिवसीय) १८३– सानिध्य (सान्निध्य) १८४– साम्राज्ञी (सम्राज्ञी) १८५– एहतराम (एहतिराम) १८६– मिश्रा (मिश्र) १८७– परिवर्तन (परिवर्त्तन) १८८– बड़ी प्रसन्नता की बात (बहुत प्रसन्नता की बात) १८९– विश्वविद्यालयी (विश्वविद्यालयीय) १९०– बी.एड., बी. एड्., बी०एड० (बी० एड्०)।

क्रमशः ✧

मन धारण कर ले संतोष

-गरिमा खंडेलवाल
उदयपुर

गहरे प्रयास कमाए संतोष
भरा खजाना थोड़ा रख ले
जरूरतमंदों को थोड़ा दे दे
थोड़े में गुजर-बसर कर ले
सुख का खजाना कर ले संतोष
मन धारण कर ले संतोष ।।१।।

दुख का कारण लालच जानो
धरी रह जाएगी दौलत सारी
धरी रह जाएगी कोठी गाड़ी
जीवन में संयम कर ले
खुशहाली के लिए कर ले संतोष
मन धारण कर ले संतोष ।।२।।

अपनी मेहनत पर कर ले भरोसा
छोड़ दे बेईमानी
छोड़ दे राग द्वेष पराई
छोड़ दे लेना सहारा औरों का
खुद की कमाई में कर ले संतोष
मन धारण कर ले संतोष ।।३।।

मोह के बंधन दुनिया माया
ना कुछ पाया
ना कुछ खोया
काम क्रोध सागर की लहरें
जीवन नैया पतवार संतोष
मन धारण कर ले संतोष ।।४।।

निन्यानवे के फेरे फंसा असंतोषी
काठी बेच के
चैन से सोता
संतोषी को नहीं किसी से होड़
मन धारण कर ले संतोष
मन धारण कर ले संतोष ।।५।।

इससे पहले कि यह वर्ष विदा ले

-कमलेश कमल

इससे पहले कि यह वर्ष विदा ले
भूलें पूर्णता की उम्मीदें
क्योंकि मशीन नहीं मानव हैं हम
हो सके तो भूलें
कुछ नादानियाँ
कुछ ग़लतबयानी
कुछ बेवक़ूफ़ियाँ

इससे पहले कि घड़ी की सूई
निकले इस पार से उस पार
निकल जाने दें वह मवाद भी
जो जमा है अपमान के फोड़े में
किसी अपने ने कह दिया
अनजाने ही कुछ
और आप जतन से उसे सेते रहे

हो सके तो भूलें
टूटे सपनों को
और मना लें
रूठे अपनों को
क्योंकि जहाँ से हटी
आत्मीयता की रजाई
वहीं से घुस आता है
बेगानेपन का सबब

और सबसे ज़रूरी बात
इससे पहले कि लिखें
नव वर्ष की इबारत
कर लें अपनी स्लेटें साफ

आचार्य श्री विभवसागर महाराज ने दो दीक्षाएं प्रदान की

बांसवाड़ (राज.) दीक्षार्थी बहिनों ने दीक्षा से पूर्व किया केशलोंच आचार्य श्री १०८ विभव सागर महाराज ने श्रमण परम्परा अनुसार दीक्षा दी व मेंना दीदी को नया नामकरण करते हुए आर्यिका १०५ स्वाध्याय श्री माताजी दिया। साथ ही अंगूरी दीदी को क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान करते हुए नया नामकरण क्षुल्लिका १०५ सामायिक श्री माताजी दिया।

अब संघ में इन दो दीक्षा उपरान्त २६ पिच्छी का संघ हो गया है। दीक्षा से पूर्व दीक्षार्थी बहिनों के दीक्षा के संस्कार किए गए। आचार्य श्री द्वारा मस्तक पर श्रीकार का लेखन किया। व केशलोंच किया। इस आयोजन में संगीतकार द्वारा धार्मिक भक्ति गीत व केशलोंच के भक्तिमय आवाज से इस आयोजन को भक्तिमय व भाव विभोर बना दिया।

जीवन मे संयम महत्वपूर्ण है : आचार्य श्री

इस अवसर पर आचार्य श्री विभव साग़र महाराज ने दीक्षार्थी पर प्रकाश डालते हुए कहा गर्व है कि ये जैन धर्म की पालना करते हुए त्याग तपस्या के मार्ग पर आगे बढ़े। जीवन मे संयम महत्वपूर्ण है, जो जीवन की दशा और दिशा दोनो को बदल देता है। उन्होनें एक सारभूत बात कही, कहा- जीवन में लेना है तो जैनेश्वरी दीक्षा लेना, देना है तो दान देना।

संकलन- अभिषेक जैन लुहाड़िया
रामगंजमडी

जज्बात

-रमाकांत सोनी
नवलगढ़

उमड़ते मन के भावों को दिशा कोई दे दीजिए
प्यार थोड़ा ही सही जनाब प्यार थोड़ा कीजिए

दिल के हो जज्बात प्यारे लम्हों तक आते ही रहें
आनंद के हो चंद पल जिंदगी सुख से जी लीजिए

हंस-हंसकर मीठी बातों का रस थोड़ा पीना सदा
धूप छांव सी जिंदगी यार खुलकर आनंद लीजिए

मुस्कान के मोती महकें खुशियां चेहरों पर हों सदा
फूलों सी खुशबू महकेगी शुभ कर्म ऐसा कीजिए

मेरे मन के अल्फाजों से नेह की गंगा बहती रहे
माना डगर कठिन बहुत राह कदम बढ़ने दीजिए

आंधी तूफां हर मुश्किल का सामना खुलकर करें
बुलंदियां मिलती रहें उमंग उत्साह भर लीजिए

ननद और सास में अन्तर कुछ नहीं

रोते हुए 'संसार' में आई,
तब 'मां' ने गोद में उठाया.!
रोते हुए 'ससुराल' गई,
तब 'सास' ने गले से लगाया!

'मां' ने 'जीवन' दिया तो...
'सास' ने 'जीवन-साथी' दिया..!

'मां' ने 'चलना-बैठना' सिखाया तो...
'सास' ने 'समाज में उठना-बैठना' सिखाया.!

'मां' ने 'घर के काम' सिखाए तो...
'सास' ने 'घर चलाना' सिखाया.!

'मां' ने 'कोमल कली' की तरह संभाला तो...
'सास' ने 'विशाल वृक्ष' जैसा बनाया.!

'मां' ने 'सुख में जीना' सिखलाया तो...
'सास' ने 'दुख में भी जीना' सिखलाया.!

'मां;.. 'ईश्वर' के समान है तो...
'सास'.. 'गुरु' के समान है..।
नमन दोनों मां को

नैन में पानी का अब मंजर कहाँ है

-ज्ञानेश कुमार मिश्र,
अजमेर

अब नहीं बंधन रहा संबंध दरम्याँ,
मर चुके संबंध सो आदर कहाँ है।
आज बंदर बाँट ने उम्मीद छीनी,
है नहीं उम्मीद सो अवसर कहाँ है।

अब बदन पर बेहया हावी हुई है,
नैन में पानी का अब मंजर कहाँ है।
मानता होशियार है सठ आज खुद को,
इसलिए उसके लिए रहबर कहाँ है।

छोड़ जिसने है दिया सम्मान करना,
तो बड़ों का उसके दिल में डर कहाँ है।
आज दौलत को ही जो भगवान माने,
उनको अब मंदिर की चौखट दर कहाँ है।

पहले महिला तन को ढँक के रखती थी,
आज उसके बदन पर अंबर कहाँ है।
आज हाकिम प्रश्न सारे टालता है,
प्रश्न कर्ता मर रहा, उत्तर कहाँ है।

नैतिक संस्कार

धर्म में सोलह संस्कारों का वर्णन है। मनुष्य जीवन को सुखी श्रेष्ठतम बनाने के लिए जन्म मृत्यु के चक्र से परमगति की प्राप्ति हो सके सोलह संस्कारों का पालन नियम पूर्वक किया जाता है, ये हमारे वर्तमान जीवन में प्रभावशाली हैं ।

लेखकों से निवेदन
प्रकाशनार्थ रचनाएं टाइप की हुई और मौलिक हों।
डॉ. नीलम जैन, सम्पादक
एच. २१० डैफोडील्स, मगरपट्टा, पुणे-४११०१३, मो.८६६६३६६४८१

दो दिशाएं

-ज्गबीर सिंह कौशि

१
शरण तेरी पड़ा भगवन, उठा अब तो वरो दाता।
सहारा आपका केवल, दया मुझपर करो दाता।
बिना तेरे यहाँ मेरा, बताओ कौन है मालिक-
हमारी पीड को आकर, अभी खुद ही हरो दाता

२
कहानी सब गढ़ी झूठी, हवा देते विवादों को।
बड़े शातिर छुपे बैठे, लड़ा कर आप प्यादों को।
बिछाया जाल जो तुमने, उसे हम देर से समझे-
सफल होने नहीं देंगे, बुरे तेरे इरादों को।

पाठकीय प्रतिक्रिया

अपने देश की भाषा 'हिन्दी' के लिए चेतना जगाने वाला अति सुन्दर सम्पादकीय के साथ पत्रिका के नवम्बर - २०२१ अंक में प्रकाशित सम्पूर्ण सामग्री रोचक, प्रेरक एवं ज्ञानवर्द्धक किंवा संग्रहणीय है।

आदरणीय रमा भाटी जी की कहानी 'तारा' समाज को आईना दिखाती है। कहानी दुखान्त है, किन्तु अच्छी लगी।

सम्पादक द्वय के साथ उक्त अंक के समस्त रचनाकारों को हार्दिक बधाई। पत्रिका के प्रोज्ज्वल भविष्य की कामना।

डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'
चम्पावत (उत्तराखण्ड)
मोबाइल - ९४११३४७९३४

श्री देशना में प्रकाशनार्थ लेख प्रेषित है। पत्रिका चिरस्थायी बने तथा समाज को सही दिशाबोध दे, हम शुभकामना प्रेषित करते हैं।

-सम्पत लाल छाबड़ा,
कोलकाता।

सामाजिक सरोकारों को दिशा देती हुई बेहतरीन पत्रिका। बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

-रामबाबू शर्मा,
जयपुर

आचार्य ज्ञानसागर

कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, रघुनाथपुर

रघुनाथपुर में स्थापित सराक केन्द्र पुरुलिया रोड़ पर स्थित है, तीन मंजिला इस भवन में चैत्यालय, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र एवं सिलाई केन्द्र संचालित है। ब्र. भैया मनीष जी के निर्देशन में सराक बन्धु जैनधर्म का बेसिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। श्री कमल पाटौदी (महामंत्री) विगत २५ वर्षों से निरन्तर पूर्ण समर्पण एवं निष्ठा से समस्त क्षेत्र की गतिविधियों को सुव्यवस्थित करते हैं। वर्तमान में कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र में १६० छात्र भिन्न-२ कोर्स कर रहे हैं। सिलाई सेंटर से सैकड़ों बालिकाएं सिलाई में प्रशिक्षण लेकर अपनी योग्यता से स्वावलम्बी बनी हैं/बन रही हैं । भविष्य में फैशन डिजाइनिंग आदि कोर्स चलाने की योजना है।

कम्प्यूटर केन्द्र के छात्र व प्रशिक्षक

सिलाई केन्द्र

सिलाई केन्द्र ट्रस्ट द्वारा संचालित प्रमुख उपलब्धियाँ

(१) १६ औषधालय संचालित हो रहे हैं। (२) ६० धार्मिक व नैतिक पाठशालाएँ चल रही हैं। (३) बुजुर्गों एवं निराश्रित भाई-बहनों को पेंशन दी जा रही है। (४) २०१२ से रघुनाथपुर सेन्टर पर कम्प्यूटर ट्रेनिंग व सिलाई केन्द्र चल रहा है। (५) १९९४ से उपाध्याय श्री की प्रेरणा से मेरठ से 'सराकसोपान' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। (६) प्रतिवर्ष आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज के चातुर्मास में १०० सराक छात्रछात्राओं को आमंत्रित किया जाता है। (७) प्रतिवर्ष १०० से १५० सराक भाईयों को श्री सम्मेद शिखर की यात्रा करायी जाती है। (८) गरीब सराक बच्चों को पढ़ाई एवं बीमारी । विशेष हेतु आर्थिक सहयोग यथावत् दिया जा रहा है।

सराक क्षेत्र में विस्तृत भूभाग में हमारे लाखों बिछुड़े श्रावक बन्धु रहते हैं। सराक 'श्रावक' शब्द का ही अपभ्रंश है। बंगाल, बिहार, उड़ीसा के दूर-दराज में ग्रामों में आज ये बदहाली एवं अभावों का जीवन जी रहे हैं। समाधिस्थ आचार्य श्री ज्ञानसागर जी मुनिराज की प्रेरणा से इनके उत्थान के कार्य करने के लिए भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सराक ट्रस्ट की स्थापना की गई। सराक ट्रस्ट द्वारा अनेक गतिविधियां संचालित की जा रहीं हैं। समाज से अनुरोध है कि अपने भाइयों को तन, मन, धन से सहयोग देकर पुण्यार्जन करें।

गजराज गंगवाल, अध्यक्ष
मो 9953001705

कमल कुमारपाटौदी, महामंत्री
मो. 8016031008

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सराक ट्रस्ट

पुरुलिया रोड, रघुनाथपुर (म.प्र.)

शुभ चिंतक फाउंडेशन ट्रस्ट (रजि.)

भारतीय कार्यालय : एच-२१०, डैफोडिल्ज, मगरपट्टा, पुणे-४११०१८ (महाराष्ट्र) फोन : ०९९७०७९०३९८

मानव-सेवा, शिक्षा-प्रचार, समाजोत्थान
एवं देव-शास्त्र-गुरु के प्रति समर्पित

उद्देश्य

- स्वास्थ्य सेवा शिविर निःशक्त जन हेतु कृत्रिम उपकरणों का वितरण
- योग एवं आयुर्वेद संबंधी जागरूकता शिविर
- गृहणियों एवं साधनहीनों का कंप्यूटर प्रशिक्षण
- विश्व की विभिन्न जातियाँ एवं देशों में जैनत्व के परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक शोधकार्यों प्रोजेक्ट हेतु अनुदान
- प्राचीन जैन साहित्य को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद को प्रोत्साहन
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपयोगी साहित्य का प्रकाशन
- संस्कृति संरक्षण में संलग्न महिला पुरुष एवं शिक्षा प्रसार में संलग्न गुरुकुलों का सम्मान
- रिफंडेबिल ऋण-स्वरोजगार हेतु ऋण रोजगार जैन संस्थानों में
- संपूर्ण देश में जैन संतों के विहार, विश्राम एवं कार्यरत संस्थाओं को सहयोग
- प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार
- प्रतिभाशाली युवा छात्रों को प्रोत्साहन हेतु छात्रवृत्ति
- स्तरीय जर्नल्स का प्रकाशन
- नैतिक प्रशिक्षण, शाकाहार प्रसार एवं पर्यावरण संरक्षण चेतना विशेष प्रशिक्षण कार्यशालाएँ एवं सेमिनार, सम्मेलन
- अन्य समाजोपयोगी सामाजिक कार्य
- जैन धर्म पर आधारित कथानकों का वृत्तचित्र निर्माण
- कामकाजी महिलाओं एवं छात्राओं हेतु उचित स्थलों पर हॉस्टल निर्माण

आप अपनी सहयोग राशि HDFC Bank A/c. 00901450000179 में जमा कर सकते हैं।

स्वामी– शुभ चिन्तक फाउण्डेशन ट्रस्ट, पुणे प्रकाशक– उपश्रेणिक जैन 210 डैफोडिल्स मगर पट्टा पुणे 411013 (महाराष्ट्र) के लिए मुद्रक–विकास आफसेट एण्ड पब्लिशर्स 45 सैक्टर .एफ औद्योगिक क्षेत्र गोविंद पुरा भोपाल. से मुद्रित। सम्पादक डॉ. नीलम जैन, पुणे, मो. 89993 99481 पत्रिका में प्रकाशित लेख समाचारादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधिक न्यायालयीन वाद का क्षेत्र पुणे होगा।